*International Journal of Humanities and Social Science Invention*
*ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714*
*www.ijhssi.org ||Volume 5 Issue 8 || August. 2016 || PP.64-69*

# ''रामायण के पात्रों का चरित्र–चित्रण''

डा. उर्मिला मीणा
*सहआचार्य संस्कृत*
*महारानी श्री जया महाविद्यालय,*
*भरतपुर (राज.)*

रामायण के पुरुषपात्र ही नहीं स्त्रीपात्र भी बहुसंख्यक ऐसे हैं जिनके चरित्र प्रशस्त और आदर्श है। रामायण में चरित्र को सर्वाधिक मान्यता दी गई है। उसे ही श्रेष्ठता की कसौटी माना गया है। अतः किसी भी पात्र के लघु, वृहत, समग्र क्रियाकलाप उसकी वास्तविक स्थिति जानने के लिए दिखाने आवश्यक होते हैं। परन्तु वह सभी सामग्री किसी विपुलकाय ग्रन्थ में ही प्रस्तुत की जा सकती है। लघु–ग्रन्थ में नहीं। अतः यहाँ किसी भी पात्र का उल्लेख संक्षेप में किया जायेगा।

**महाराजा दषरथ :–**

नारायण–ब्रह्म–मारीचि–सूर्य–मनु–इक्वाकु आदि क्रम से 63वीं पीढी में ये अज से उत्पन्न हुए थे। कोशल जनपद के अन्तर्गत अयोध्या नाम की नगरी इनकी राजधानी थी। इनके पूर्वजन्म की कथाओं में से स्वायम्भुव मनु की कथा प्रमुख है। इनके विवाह की विचित्र कथा आनन्दरामायण (1/1/32–74) में वर्णित है।

वाल्मीकि रामायण तथा अध्यात्म रामायण की दृष्टि में दशरथ की 350 रानियाँ थीं, जिनमें कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा पट्टहिषी थी इन तीनों का दशरथ के अश्वमेघ यज्ञ में भी विशेष उल्लेख है। राम के वनवास के समय इन 350 माताओं से विदा ली थी।

**त्रयः शतषतार्धा हि ददर्षावेक्ष्य भातरः।1**
**तष्चापि तथैवार्ता मातृर्दषरथात्मजः।।** (वा.रा., 3/39/36)

वाल्मीकि के अनुसार दशरथ के राम–लक्ष्मण–भरत–शत्रुध्न नामक चार पुत्र तथा औदीच्य पाठ के अनुसार शान्ता नाम की एक पुत्री थी इन चारों पुत्रों में ज्येष्ठ राम और कनिष्ठ शत्रुध्न थे। भरत और लक्ष्मण में भरत का ही ज्येष्ठ होना अधिक प्रामाणिक है। शान्ता नामक औरस कन्या को दशरथ ने अपने घनिष्ठ मित्र रोमपाद नामक राजा को दत्तक के रूप में दे दिया था। शान्ता का विवाह ऋष्यश्रृङ्ग के साथ हुआ, जिन्होंने सपत्नीक अयोध्या आकर दशरथ का अश्वमेघ यज्ञ और पुत्रेष्टि यज्ञ सम्पन्न कराया था।

वृद्धावस्था में राजा दशरथ अपने ज्येष्ठपुत्र अमिततेजा राम को सर्वगुण सम्पन्न देखकर उन्हें अपने जीवनकाल में ही राजा बना देने की चिन्ता करने लगे। उनके द्वारा अभिषेक की तैयारी का समाचार मन्थरा से सुनकर कैकेयी ने दशरथ से दो वर माँगे – 1. राम का वनवास और 2. भरत का राज्यभिषेक। देवासुर–संग्राम में सहायता करने के कारण दशरथ ने दो वर देने का वचन दिया था। इससे राजा दशरथ ने अपने ऊपर धर्म संकट देखकर कैकेयी से राम वनवास का वर लौटा लेने के लिए बहुत अनुन्य–विनय की, अन्ततोगत्वा सीता लक्ष्मण के साथ राम वन को चले गए। अयोध्या से चलते समय दशरथ ने भी कुछ दूर तक उनका अनुशरण किया और श्रीरामादि के चित्रकूट पहूँच जाने पर उन्होंने युवावस्था में किए गये अपने पाप कर्म स्मरण कर उसे कौशल्या को सुनाया और अपने प्राण छोड़ दिए तुलसीदास के अनुसार दशरथ ने जीवन–मरण दोनों के ही उत्तम फलों को प्राप्त किया था।

**जियन–मरण फल दषरथ पावा। अण्ड अनेक अमल यष छाबा।[2]**
**जियत राम विधुवदन निहारा। राम विरह करि मरन सँवारा।**

(रा.मा., 1/15,4/1–2)

दशरथ इसलिए कहते थे कि उनका कान्ति एक हजार सूर्य किरणों के समान थी अपने निर्मल यश से दसो दिशाओं में विख्यात थे, रावण के शत्रु श्रीराम के पिता थे–

**दषरष्मिषतोपमधुति यषसा दिक्षु दषस्वपि श्रुतम्।[3]**
**दषपूर्वरथ यमाख्यया दषकण्ठारिगुरूं विदुर्बुधाः।।** (रघु, 8/29)

रावण वध के अनन्तर सीताशुद्धि के समय ब्रह्मादि देवों के साथ दशरथ भी उत्तम विमान पर बैठकर आते हैं। और श्रीराम को अयोध्या पर राज्य करने तथा लक्ष्मण–सीता को राम में अनुरक्ति बनाये रखने का आदेश देते हैं।

**श्रीराम –**

नारायण–ब्रह्म, मरीचि–कश्चप–सूर्य–मनु–इक्वाकु आदि क्रम में 64वीं पीढी में श्रीराम का जन्म माना जाता है। दशरथ ने जब ऋष्याश्रृङ्ग द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था तब श्रीराम आदि चार भाइयों की उत्पत्ति हुई थी इन सभी में अवस्था गुणों से भी श्रीराम श्रेष्ठ थे। रावण वध के लिए उद्धत देवताओं की प्रार्थनाओं पर भगवान् विष्णु ही श्रीराम के रूप में अवतीर्ण हुये थे। चैत्र शुक्ल। नवमीं सोमवार पुनर्वषु नक्षत्र तथा कर्क लग्न में इनका जन्म हुआ था, लोक के रमण करता होने से इनका नाम 'राम' तथा कमलवाषिनी श्री के पति होने से 'श्रीराम' नाम प्रसिद्ध हुआ।

**रामस्य लोकरामस्य**[4] (वा.रा., 1/18/29)
**श्रियः कमलवासिन्या रमणोऽय महाप्रभुः।**
**तस्माछीराम इत्यस्य नाम सिद्धं पुरातनम्।।**[5] (पद्मपु.–उ.ख, 261/74)2

यज्ञरक्षा हेतु ये विश्वामित्र के साथ गए ताटका–वध से प्रसन्न होकर विश्वामित्र ने नाना प्रकार के शस्त्रास्त्र राम को दिए। मिथिला पहुँचने पर धनुर्भङ्ग के अनन्तर सीता से श्रीराम का विवाह होता है। रामादि चारों भ्राता राजा दशरथ के अपने शरीर से आविभूर्त चार भुजाओं के तुल्य प्रिय थे। अपने वनवास–काल में श्रीराम, सुतीक्ष्ण–शरभङ्ग–अगस्त्य भ्राता आदि ऋषियों से मिलकर अगस्त्य के आश्रम में जाते हैं और वहाँ अगस्त्य के द्वारा उन्हें धनुष–असि आदि प्राप्त हुए। विराध आदि दैत्यों का वध करते हुए शबरी के आश्रम में जाकर राम उसका स्वागत स्वीकार करते हैं, ऋष्यमूक पर्वत पर पहुँचकर सुग्रीव से मित्रता तथा बालिका वध करके सुग्रीव को किष्किन्धा का राजा बनाते हैं। राम ने अपने राज्यकाल में भी अनेक अद्भुत कार्य किए। जैसे– शम्ब्कवध, सीतापरित्याग, स्वर्णमयी सीता के साथ अश्वमेघादि यज्ञों का सम्पादन। शत्रुध्न को लवणासुर–वध का उपाय बताना आदि। काल के द्वारा ब्रह्मा का सन्देश पाकर वे परमधाम जाने के लिए सरयू तट पर आते हैं, वहाँ ब्रह्मादि देवों से प्रार्थित होकर परमधाम चले जाते हैं। श्रीराम को लौकिक विविध कष्ट प्राप्त होने में भृगु का शाप ही कारण था। क्योंकि विष्णु ने अपने चक्र से भृगुपत्नी का शिरच्छेद की प्रक्षेप मानते हैं। जहाँ राम को विष्णु का अवतार कहा गया है राम को विष्णु के रूप में चित्रित किया गया है।

**लक्ष्मण –**

ये सुमित्रा से उत्पन्न हुए थे, राम–भरत के अनुज तथा शत्रुध्न के अग्रज माने जाते हैं। सम्पूर्ण शुभ लक्षणों से सम्पन्न होने के कारण इनका नाम लक्ष्मण हुआ था ये वाल्यावस्था से ही श्रीराम के प्रति अधिक अनुराग रखते थे। राक्षसों का वध करने के लिए ये श्रीराम के साथ महर्षि विश्वामित्र के साथ गए और वहाँ सावधानी से उनके यज्ञ की रक्षा की। ये विश्वामित्र के साथ मिथिला भी गए जहाँ वशिष्ठ ने इनके लिए उर्मिला का वरण किया था।

श्रीराम इन्हें अपनी अन्तरात्मा समझते थे। इन्होंने श्रीराम से अपने को भी वन में चलने का आग्रह किया और श्रीराम की स्वीकृति पाकर उनके पीछे पीछे ऐसे चले गए जैसे सूर्य के पीछे दिन चला जाता है।

वन में तापसों ने श्रीराम आदि के साथ इन्हें भी मङ्गलमय आशीर्वाद प्रदान किए थे, पञ्चवटी में श्रीराम ने शूर्पणखा को इनके पास भेजा उस समय श्रीराम के आदेश पर इन्होंने शुर्पणखा के नाम–कान काट दिए रावण द्वारा सीता का हरण कर लिए जाने पर इन्होंने श्रीराम को धैर्य और उत्साह दिलाया। श्रीराम से इन्होंने यह भी कहा कि शोक तो कार्य का विनाशक होता है।

लंकायुद्ध में मेघनाद के नागपाश में आबद्ध हो जाने पर श्रीराम ने इनकी शक्ति–पराक्रम–भ्रातनिष्ठा–कर्त्तव्य परायणता तथा अन्य विशिष्ट गुणों का उल्लेख करते हुए इनके लिए विलाप किया। विभीषण के अनुरोध पर श्रीराम ने इन्हें इन्द्रजित का वध करने के लिए भेजा इन्होंने भयंकर युद्ध करते हुए उसका वध कर दिया। रावण के शक्तिप्रहार से मूच्छित हो जाने पर हनुमान द्वारा लाई गई औषधियों द्वारा सुषेण ने इन्हें स्वस्थ कर दिय। रावण वध के अनन्तर विमानस्थ दशरथ ने इन्हें भी आशीर्वाद दिया था और राम का सदैव अनुगमन करने के लिए कहा था जिसका पालन इन्होंने पूर्ण मनोयोग से किया।

तपसरूप से आये हुए काल की व्यवस्थानुसार जब श्रीराम ने इनका परित्याग कर दिया तो वे तत्काल सरयूतट पर आए और जल से आचमन कर प्राणवायु को रोक दिया, इस प्रकार भगवान विष्णु के चतुर्थाश रूप लक्ष्मण को इन्द्र स्वर्ग में ली गए तो देवताओं ने उनका हर्षपूर्वक पूजन किया।

**वसिष्ठ :–**

जप करने वालों में श्रेष्ठ वसिष्ठ दशरथ के माननीय ऋत्विज् थे। इन्होंने विश्वामित्र के समस्त दिव्यास्त्रों का अपने ब्रह्मदण्ड से शमन कर दिया था। विश्वामित्र की उग्र तपस्या के प्रसन्न होने पर इन्होने भी विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि रूप में स्वीकार कर लिया इस प्रकार विश्वामित्र ने उत्तम ब्राह्मणत्य को प्राप्त कर इनका पूजन किया ये इक्वाकु कुल के देवता माने जाते थे। दशरथ पुत्रों के नामकर्ण आदि संस्कार इनके द्वारा ही सम्पन्न किये गये थे। इन्हीं के परामर्श ने

यज्ञरक्षार्थ राम–लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ भेज दिया था। श्रीराम आदि के विवाह अवसर पर सूर्यवंश का विस्तृत परिचय इन्होंने ही जनक को दिया था।

दशरथ की प्रबल इच्छा देखते हुए इन्होंने श्रीराम के राज्याभिषेक की समस्त सामग्री एकत्र करा दी थी। श्रीराम–लक्ष्मण–सीता के वन चले जाने पर भरत के साथ चित्रकूट गए और वहाँ इक्वाकुकुल की परम्परा के अनुसार ज्येष्ठ पुत्र के ही राज्याभिषेक का औचित्य सिद्ध करते हुए श्रीराम के राज्य ग्रहण करने के लिए कहा, परन्तु श्रीराम के पिता की आज्ञा पालन से विरत न होने तथा अयोध्या वापस न लौटने पर इन्होंने श्रीराम के प्रतिनिध के रूप में स्वर्णभूषित पादुकाएँ भरत को दे देने के लिए कहा, जिसे श्रीराम ने स्वीकार कर लिया।

इनके आश्रम में एक बार जब दुर्वाषा ऋषि उपस्थित थे तो राजर्षि दशरथ ने दुर्वासा से अपना भविष्यफल बताने का आग्रह किया। उनके आग्रह पर दुर्वासा द्वारा बताये गये भविष्यफल से दशरथ ने भविष्य से श्रीराम आदि को मिलने वाले दुःखों का ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

**विष्वामित्र –**

ये कान्यकुण्ज देश के राजा थे। इन्होंने हजारों वर्षों तक राज्य किया। अपने राज्यकाल में किसी समय एक अछौहिणी सेना को साथ लेकर नगर–राष्ट्र, नदी–पर्वत तथा आश्रमों को देखते हुए महर्षि वसिष्ठ ने सेनासहित विश्वामित्र का महाभोजन से सत्कार किया राजर्षि विश्वामित्र ने चलते समय उनकी शबला गाय माँगी परन्तु वसिष्ठ ने जब उस कामदोहिनी शबला को देना स्वीकार नहीं किया तो विश्वामित्र उसे बलपूर्वक ले जाने लगे, अन्ततोगत्वा विश्वामित्र ने वसिष्ठ पर अपने बाणों की वर्षा की परन्तु केवल ब्रह्मदण्ड से ही वसिष्ठ ने उन सभी का शमन कर दिया। उस समय विश्वामित्र ने कहा था।

**धिग्बलं क्षत्रियबलं ब्रह्मतेजोबलं बलम्।**[6]
**एकेन ब्रह्मदण्डेन सर्वास्त्राणि हतानि मे।।** (वा.रा., 1/56/23)

अर्थात् ब्रह्मतेज का ही बल प्रशंसनीय है। क्षत्रिय का बल तो धिक्कार के योग्य है। क्योंकि वसिष्ठ ने एक ही ब्रह्मदण्ड के द्वारा मेरे सभी अस्त्रों के नष्ट कर दिया। इस घटना का उन पर इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि राज्य छोडकर तप करने लगे, अपने यज्ञ के रक्षार्थ ये राम लक्ष्मण को दशरथ से माँगकर ले गए, श्रीराम को प्रसन्न होकर त्रिशूल–ब्रह्मास्त्र–वरुणपाश आदि अनेक दिव्य अस्त्र तथा बला–अतिबला नामक विद्याये भी समप्रित कीं।

**सुग्रीव–**

इनके पिता का नाम ऋक्षरजस था। वस्तुतः इनका जन्म सूर्य के तेज से हुआ था। श्रीराम द्वारा बालि के मारे जाने पर ये किष्किन्धा के राजा बने। इनकी पत्नि के नाम रूमा था। जोकि बालि की पत्नि तारा भी बालि–वध के अनन्तर इनकी पत्नि थी।

कवन्ध के कहने पर लक्ष्मण के साथ श्रीराम जब ऋष्यमूक पर्वत पर पहुँचे तो हनुमान ने सुग्रीव से श्रीराम का परिचय कराया और हनुमानजी के ही प्रयास से राम–सुग्रीव की मैत्री स्थापित हुई। जिसके कारण ही श्रीराम ने अपने मित्र सुग्रीव के समस्त दुःखों का विनाश करने के उद्देश्य से बालिक का वध किया। सुग्रीव ने भी अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार चारों दिशाओं में वानरयूथपतियों को सीता की खोज करने के लिए भेजा। श्रीराम को इन्होंने पहले यह परामर्श दिया कि विभीषण को शरण न दी जाय परन्तु बाद में श्रीराम द्वारा विभीषण को शरण देने की बात का अनुमोदन भी किया। इन्होंने रावण के पास बिना ही श्रीराम की आज्ञा प्राप्त किये सहसा पहुँचकर उनके साथ घोर मल्लयुद्ध किया और अन्त में उसे अत्यधिक थकाकर श्रीराम के पास लौट आए लौट आने पर श्रीराम ने इन्हें ऐसा दुःसाहस पूर्ण कार्य करने के लिए रोका। लंका विजय के पश्चात् ये पुष्पक विमान पर आरूढ होकर श्रीराम के साथ अयोध्या आए थे। भगवान् राम के राज्याभिषेक–महोत्सव में सम्मिलित होने के बाद स्वदेश लौट गये। श्रीराम के परमधाम लौटने के समय इन्होंने सूर्यमण्डल में प्रवेश किया।

**हनुमान –**

कुञ्जर की पुत्री अंजना केशरी की पत्नि बनी कामरूपिणी होने के कारण उसने किसी दिन रूपयौवन सम्पन्ना मानव–स्त्री का रूप ग्रहण किया। मरूत देवता ने उसे इस रूप में देखा और असाक्त होकर उसका आलिंगन किया। अन्जना के आपत्ति करने पर मरूत ने उसे एक वीर्रूवान्–बुद्धिसम्पन्न पुत्र, जिसकी गति वायु के समान होगी के उत्पन्न होने का वर उसे दिया।

**मनसाऽस्मि गतो यत् त्वां परिष्वज्य यषस्विनि।**[7]
**वीर्यवान बुद्धिसम्पन्नस्तव पुत्रो भविष्यति।।**
**महासन्त्वो महातेजा महाबलपराक्रम।**
**लङ्केल प्लवनै चैव भविष्यति मया समः।।** (वा.रा., 4/66/18,19)

वरदान के फलस्वरूप अन्जना गर्भवती होकर एक गुफा में हनुमान को जन्म देती है। उदीपमान सूर्य को देखकर और फल समझकर उसे पकड़ने के लिए शिशु आकाश की ओर उछल पड़ा। इन्द्र के बज्र से आहत जिससे इनकी बाई ठोडी भग्न हो गई थी इसी कारण इन्द्र ने इनका हनुमान नाम रखा था।

**तदा शैलाग्रषिखरे वामो हनुरभज्यत।**[8]
**ततोऽभिनामधेयं ते हनुमानिति कीर्तितम्।।** (वा.रा., 4/66/24)

पुत्र की वैसी हालत देखकर वायुदेव ने कुपित हो अपनी गति मन्द कर दी। इसके फलस्वरूप सभी प्राणी व्याकुल हो उठे। तब सभी देवता आकर वायु को मनाने लगे। बहस हनुमान को ब्रह्ममात्र आदि से अवध्यता, इन्द्र ने स्वेच्छामरण आदि वर दिए।

वाल्मीकि रामायण में हनुमान के लिए जो नाम अधिक प्रयुक्त हुए है इनमें यह कहा सकता है। कि हनुमान वायुपुत्र के रूप में अधिक प्रसिद्ध थे तथा केसरी अन्जना के पुत्र में उतने प्रसिद्ध नहीं थे।

ये ब्रह्मादि देवों के वर से विशेष शक्तिसम्पन्न होकर ऋषियों के आश्रमों की सामग्रीनष्ट करने लगे इसीलिए भृगु–अंगिरावंशीय ऋषियों ने भृदु कोपवश हनुमान को अपना बल भूले रहना का शाप दिया और कहा कि जब कोई तुम्हारे बल का स्मरण तुम्हें करायेगा तभी तुम्हारा बल प्रकट होगा बालि–सुग्रीव के विवाद के समय किसी ने इनके बल का स्मरण नहीं कराया जब समुद्र–लङ्घन का समय आया तो जाम्बवान ने उन्हें उनके बल का स्मरण करायाथा।

हनुमान संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं के विद्वान थे। अशोकवाटिका में वे इसीलिए संस्कृत नहीं बोलते कि संस्कृत बोलने से सीता उन्हें रावण न समझ ले–

**वाचं चोदाहरिष्यामि मानुषीसिह संस्कृताम्।**[9]
**यदि वाचं प्रदास्यामि द्रिजातिरिव संस्कृताम्।।**
**रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति।**
**अवष्यमेव वक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवर्।।** (वा.रा., 5/30/17,18)

**विभीषण –**

ये विधवा–कैकयी के पुत्र रावण के कनिष्ठ भ्राता धार्मिक तथा सदाचार परायण थे। इन्होंने दस हजार वर्षों तक नियमित रूप से घोर तपस्या की, जिससे प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने अमरत्व भी प्रदान किया, रावण के अत्याचारों से दुःखी होकर ये श्रीराम की शरण में गए और युद्ध में श्रीराम –लक्ष्मण की अनेक अवसरों पर ऐसी सहायता की जो दूसरे से सम्भव नहीं थी।

रावणवध के अनन्तर लंका के राज्य पर इनका अभिषेक किया गया। लंका विजय के बाद जब श्रीराम वहाँ रूकने के लिए प्रस्तुत नहीं हुए तो इन्होंने उनकी अयोध्यायात्रा के लिए पुष्पक विमान मंगाया और वानरों का विशेष सत्कार किया। वे स्वयं भी पुष्पक विमान में बैठकर श्रीराम के साथ अयोध्या आए, श्रीराम का राज्याभिषेक देखने के पश्चात् ये श्रीराम के आदेशानुसार लंका चले गए।

श्रीराम के अश्वमेघ यज्ञ में इन्होंने मुनियों के स्वागत सत्कार का भार सँभाला था। श्रीराम ने इनके विष्णु की आराधना करते रहने के लिए कहा, जिसे इन्होंने शिरोधार्य कर लिया।

**रावण –**

वाल्मीकि रामायण उत्तरकाण्ड के अनुसार रावण ब्रह्म के पुत्र पुलस्त्य का पौत्र तथा विश्रवा का पुत्र है। लंका का निर्माण विश्वकर्मा ने सुकेश के पुत्र माल्यवान् सुभाली–माली के लिए किया था। विष्णु ने जब माली राक्षस का वध कर राक्षसों को भी परास्त कर दिया था।

**मेघनाथ –**

यह मन्दोदरी के गर्भ से जन्म लेते ही रोने लगा और मेघ के समान गम्भीर नाद से समस्त लंका जडवत् स्तब्ध हो गई थी, जिससे पिता रावण ने स्वयं ही इसका मेघनाद नाम रखा था। इसने यज्ञ करके दिव्य रथ आदि शक्तियाँ

प्राप्त की थीं। देवसेना के साथ महायुद्ध करते हुए जब इसने देखा कि मेरे पिता रावण इन्द्र से आक्रान्त हो गए हैं तो क्रोधपूर्वक शत्रुसेना में प्रवेश करके अपनी औपचारिक शक्तियों के बल पर इन्द्र को बन्दी बना लिया, अशोक वाटिका में इसने हनुमान को अवध्य समझकर उन्हें ब्रह्मास्त्र से बांध लिया, लंकादाह के समय हनुमान ने इसके भी घर में आग लगा दी थी।

**कौसल्या–**

ये अयोध्यापति दशरथ की ज्येष्ठ पत्नि तथा श्रीराम की माता थी। श्रीराम के अवतरित होने पर ये अपने पुत्र से वैसे ही सुशोभित होने लगी जैसे वज्रपाणि इन्द्र से देवमाता अदिति सुशोभित होती है।

वन गमन के समय इन्होने राम को श्रेष्ठ आशीर्वाद दिया उनका स्वस्त्ययन संस्कार किया और उनकी रक्षा के लिए विभिन्न देवताओं का आह्वान भी किया। श्रीराम के वन चले जाने पर दुःखित दशरथ इन्हीं कौशल्या के ही भवन में आए थे।

दशरथ की मृत्यु हो जाने पर ये पतिशोक से आक्रांत होकर मृतकों की भाँति श्री हीन सी पृथ्वी पर पड़ी थी, क्योंकि उनके लिए यह पतिशोक असह्य हो गया था। इससे पूर्व श्रीराम से वियुक्त होने के कारण व पुत्रशोक से अत्यन्त व्याकुल तो रहती थी। मृतराजा दशरथ के मस्तक को अपनी गोद में रखकर इन्होंने कैकेयी के प्रति कुछ आपेक्षयुक्त वचन भी कहे और फिर स्वयं सती हो जाने का निश्चय किया, परन्तु मन्त्रियों ने ऐसा नहीं होने दिया भरत के अयोध्या आने पर तथा दशरथ के शव को दाहसंस्कार हो जाने पर श्रीराम को लौटाने के लिए यह भी भरत के साथ वन गई थी। चित्रकूट में मन्दाकिनी के तट पर राम–लक्ष्मण के स्नान करने का घाट देखकर उनकी आखों से आसुओं की धारा बह चली थी।

**सीता –**

जनक ने जब चयनयज्ञ किया तो यज्ञ के योग्य क्षेत्रमण्डल का हल से कर्षण करते समय पृथिवी–भेदन करके सीता उत्पन्न हुई थी। विस्मित होकर जनक ने अनपत्य होने के कारण उस समय स्नेह से 'मेरी पुत्री' कहकर अङ्क में उठा लिया और उनकी ज्येष्ठ पत्नि ने मातृभाव से सीता का पालन किया था। इस प्रकार वस्तुतः सीता भूमिजा या अयोनिजा थी।

**तस्य लाङ्गलहस्तस्य कृषतः क्षैत्रमण्डलम्।**[10]
**अहं किलोत्थिता मित्वा जगरी नृपतेः सुता।**
**अनपत्येन च स्नेहादङ्कमारोप्य च स्वयम्।**
**ममेयं तव चेत्युक्ता स्नेहो मपि नियातितः।**
**अयोनिजां हि मां ज्ञात्वा नाध्यगच्छात् स चिन्तयन्**
(वा.रा., 2/118/28–37)

वाल्मीकि– सुन्दरकाण्ड (सर्ग 16) तथा युद्धकाण्ड (116/15) में भी सीता को वसुधा से उत्पन्न बताया गया है।

**उत्थिता मेदिनी भित्त्वा क्षैत्रे हलमुखक्षते।**[11]
**पधरेणुनिभैः कीर्णा शुभैः केढारपांसुभिः।।** (वा.रा., 5/16/16)

**सीता का राम से विवाह :–**

जनक ने यह प्रतिज्ञा थी कि शिवधनुष को जो चढा देगा (तोड देगा) उसी के साथ सीता का विवाह करूंगा, इस उद्देश्य से अनेक राजाओं ने धनुष तोडने की परीक्षा की परन्तु असफल रहे। तब परम क्रोधवश राजाओं ने मिथिला को घेर लिया किन्तु देवताओं की सहायता से जनक ने उन्हें परास्त किया, राम लक्ष्मण के साथ विश्वामित्र जब मिथिला गये तो जनक ने उनसे कहा कि यदि राम धनुष को चढा दे तो मैं अपनी अयोनिजा कन्या सीता राम को दे दूँगा। रामचरित मानस के अनुसार सीता स्वयंवर में अनेक देशों के राजा उपस्थित हुए थे। और उस स्वयंवर को देवगण भी विमानों में बैठकर देख रहे थे।

**दीप दीप के भूपति नाना।**[13]
**आये मुनि हम जो पन ठना।।**
**देव–दनुज हरि मनुज शरीरा।**
**विपुल वीर आए रनधीरा।।** (रा.मा., 1/250/7–8)

विवाह के समय सीता की अवस्था 6 वर्ष की थी श्रीराम के द्वारा धनुर्भङ्ग किये जाने पर इनका श्रीराम के साथ विधिवत् विवाह सम्पन्न हो गया। 12 वर्षों तक अयोध्या में रहने के बाद वे श्रीराम के साथ वन में चली गई। श्री राम आदि के प्रयत्न पूर्वक समझाने के बाद उन्होंने आदर्श पत्नी धर्म के अनुसार जो उत्तर दिया था। उससे यही बात सिद्ध

होती है कि जैसे बिना तारों के वीणा नहीं बज सकती, बिना चक्र के रथ नहीं चल सकता उसी प्रकार स्त्री को पति के बिना सुख भी नहीं मिल सकता उसके चाहे सौ पुत्र क्यों न हो।

**नातन्त्री गाद्यते वीणा नाचक्रो वर्तते रथः।**[12]
**नापति सुखमेधत या स्यादपि शान्तात्मजा।।** (वा.रा., 2/34/35)

श्रीराम से वियुक्त सीता ने लंका में रावण के ऐश्वर्य को देखकर तथा राक्षसियों के त्रास का अनुभव कर कभी भी राम के प्रति अपने प्रेम को कम नहीं होने दिया। अशोक वाटिका में हनुमान ने इन्हें देखकर विचार व्यक्त किया था कि इन सीता को प्राप्त करने के लिए यदि श्री राम सम्पूर्ण पृथिवी को उलट दे तो वह अनुचित नहीं होगा।

सुन्दरकाण्ड में सीता के विशद चरित्र का वर्णन वाल्मीकि आदि ने किया है। इस प्रकार सीता का चरित्र आकस्मिक विपत्तियों को सहन करने पति का अनुगमन करने पति वियोग में प्रलोभन आदि से भी परासक्त न होने आदि विषयों में नारी जाति के लिये आदर्श माना जात है।

**संदर्भ –**


1. वाल्मीकि रामायण, 3/39/36
2. रामचरित मानस, 1/15/4/1–2
3. रघुवंश, 8/29
4. वाल्मीकि रामायण, 1/25/22
5. पदम् पुराण. उ.ख., 261/74
6. वाल्मीकि रामायण, 1/5/6/23
7. वाल्मीकि रामायण, 4/66/18, 19
8. वाल्मीकि रामायण, 4/66/24
9. वाल्मीकि रामायण, 5/30/17, 18
10. वाल्मीकि रामायण, 2/110/28–37
11. वाल्मीकि रामायण, 5/16/16
12. वाल्मीकि रामायण, 2/34/35
13. रामचरित मानस, 1/250/7–8